

वार्ता 571, सुक्रौली, दिनांक-23.5.08
Disc.CD No.571, Sukrouli, dated 23.05.08

समय-00.01- 01.03

जिज्ञासु- गाँव का नाम बाबा, विष्णुपुर है और पोस्ट पड़ता सुक्रौली।

बाबा- सुक्रौली? ये चौराहे से इधर? (किसी ने कहा- इधर नहीं, उधर।) चौराहे के आस-पास सुक्रौली है ना। तो क्या लिखें गीता पाठशाला का नाम? (किसी ने कहा- विष्णुपुर, ठुठी।) इतना लम्बा-2! टी.वी. का स्क्रीन ही भर जाएगा। (किसी ने कहा- सुक्रौली।) सुक्रौली? सुक या सुख? (किसी ने कहा- सुक, सुक्रौली।) (किसी और ने कहा- सुखौली।) दोनों बातें कैसे होंगी? या तो सुख होगा या तो रोला मचाने वाला होगा। ☺

Time: 00.01- 01.03

Student: Baba, the village name is Vishnupur and post is Sukrouli.

Baba: Sukrouli? Is it this side of the crossroad? (Someone said: Not this side, it is the opposite side.) [The area] near the crossroad is [known as] Sukrouli, isn't it? So, what should I write as the name of the Gita paathashaalaa? (Someone said: Vishnupur, Thuthi.) So long! It will cover up the T.V. screen. (Someone said: Sukrouli.) Sukrouli? Is it Suk or Sukh? (Someone said: It is Suk, Sukrouli.) (Someone else said: Sukhrouli.) How can both the things be together? It will either be *sukh* (happiness) or the one which creates *rolaa* (commotion).

समय- 01.31-03.01

जिज्ञासु- बाबा, टी.वी. पे, रेडियो में जो आएगा कि यही है, यही है। वो कब से स्टार्ट होगा?

बाबा- कब से आएगा? माना वि.सी.डी सुनना सारा बंद कर दिया?

जिज्ञासु- नहीं। सुन रहे हैं। मतलब कब तक हो जाएगा?

बाबा- प्रत्यक्ष होगा तभी तो माना जाएगा। प्रत्यक्ष नहीं होगा तो जन्म कैसे कहा जाएगा भगवान का?

जिज्ञासु- तो 2018 के अंदर हो जाएगा की बाद में होगा?

बाबा- फिर वो ही बात। माना तुमने वि.सी.डी. सुनना ही बंद कर दिया अब।

जिज्ञासु- सुन रहे हैं।

बाबा- सुन रहे हो? तो उसमें बताया नहीं कि संगमयुगी कृष्ण नेक्स्ट टू गॉड कहा जाता है उसका प्रत्यक्षता रूपी जन्म कब है? पता ही नहीं चला? बाप बच्चे के द्वारा प्रत्यक्ष होते हैं? बाप का फर्स्ट क्लास बच्चा कौन है? बाप है रचयिता उसकी फर्स्ट क्लास रचना कौन है? (किसी ने कुछ कहा।) तो उसके द्वारा प्रत्यक्ष होते हैं ये टाइम नहीं बताया? भूल गए।

Time: 01.31.-03.01

Student: Baba, it will be telecasted on T.V, and announced on the radio that 'It is this one Himself'. When will it start?

Baba: Since, when will it be telecasted? Does it mean you have stopped listening to the VCDs and everything?

Student: No, I am listening to it. I mean to say up till when it will happen?

Baba: It (the birth) will be considered only when He is revealed. If He is not revealed, how will it be called God's birth?

Student: Then, will it happen before 2018 or after that?

Baba: Again the same thing. It means you have totally stopped listening to the VCDs now.

Student: I am listening to it.

Baba: You are listening to it? Then has it not been mentioned in it that the Confluence Age Krishna is called *next to God*? When does his revelation like birth take place? Didn't you come to know [this] at all? That the Father is revealed through the child? Who is the *first class* child of the Father? The Father is the Creator and who is His *first class* creation? (Someone said something.) So, hasn't the *time* when He is revealed through him (creation), mentioned? You forgot it.

समय-03.10-04.03

जिज्ञासु- बाबा, यु.पी और बिहार के बीच से होते हुए नारायणी नदी बहती है।

बाबा- हाँ जी, हाँ जी।

जिज्ञासु- और वह नदी बहुत लोगों को तबाह करती है। कई गाँव जो हैं उजाड़ कर फेंकती है।

बाबा- बहुत लोगों को...?

जिज्ञासु- बहुत गाँवों को हटा देती है अपने एरिया से। उसका क्या रहस्य है?

बाबा- बहुत लोग मर जाते हैं?

दूसरा जिज्ञासु- बरबादी ज्यादा करती है।

बाबा- जब नारायण प्रत्यक्ष होगा, एक तरफ जब प्रकृता होगी तो विनाश नहीं शुरू होगा?

जिज्ञासु- होगा।

बाबा- फिर क्या बात ? और बिहार बहार लाएगा या नहीं लाएगा?

Time: 03.10-04.03

Student: Baba, river Narayani flows between U.P. and Bihar.

Baba: Yes, Yes.

Student: And that river ruins many people. It devastates many villages.

Baba: Many people...?

Student: It sweeps away many villages from their place. What is the secret behind this?

Baba: Many people die?

Another Student: It brings lot ruination.

Baba: When Narayan is revealed, when on one side the revelation takes place, then won't the destruction start?

Student: It will.

Baba: Then what's the doubt? And will Bihar bring glory (*bahaar*) or not?

समय- 04.12-05.59

जिज्ञासु- बाबा, क्या एडवान्स में विजय माला बनेगी?

बाबा- एडवान्स की विजय माला? एडवान्स की विजय माला कैसे बनेगी?

जिज्ञासु- एडवान्स की रूद्रमाला है।

बाबा- एडवान्स की तो रूद्रमाला है। विजयमाला को भी रूद्रमाला बनाए लेंगे। जो विजयमाला की आत्मार्ये हैं जब एडवान्स में आके मिक्स हो जायेंगी तो वो भी क्या बन जायेंगी? रूद्रमाला पक्की मजबूत बन जाएगी। राजाओं की माला बन जाएगी। अभी राजार्ये कहें या आधीन कहें? अभी क्या कहें? अभी जो रूद्रमाला के मणके हैं उनको आधीन कहें या राजा कहें? अभी तो आधीन हैं। अभी बताया माया के दास और काहे के दास? प्रकृति के दास। प्रकृति माना जो पांच तत्वों का बना हुआ शरीर है उस शरीर में जो कर्मन्द्रियाँ हैं उन कर्मन्द्रियों के दास बने पड़े हैं। कर्मन्द्रियों की पूर्ति होती है तो खुश हो जाते हैं अल्पकाल के लिए। पूर्ति नहीं होती है तो दुखी हो जाते हैं उदास हो जाते हैं। उदास माना? उदास माना दास।

Time: 04.12-05.59

Student: Baba, will the *Vijaymaalaa*¹ be prepared in the *advance* [party] as well?

Baba: *Vijaymaalaa* of the *advance* [party]? How will *Vijaymaalaa* be prepared in the *advance* [party]?

Student: There is the *Rudramaalaa*² of the *advance* [party].

Baba: There is the *Rudramaalaa* of the *advance* [party]. They will make even the *Vijaymaalaa* into the *Rudramaalaa*. When the souls of the *Vijaymaalaa* come and *mix* themselves in the *advance* [party], then what will that also become? The *Rudramaalaa* will become firm and powerful. It will become the rosary of kings. Will they be called kings or subordinates now? What will they be called now? Now, those who are the beads of the *Rudramaalaa*; will they be called kings or subordinates? Now they are certainly subordinates. It was said just now, the servants of Maya and the servants of what else? The servants of *Prakriti* (nature). *Prakriti* means the body made of the five elements, the *karmendriya*³ in that body; they have become the servants of those *karmendriya*. If the [desire] of the *karmendriya* is fulfilled, they become happy momentarily. If it is not fulfilled, they become upset (*udaas*). Being upset means? Being upset means [being] a servant.

समय-06.01-07.57

जिज्ञासु- बाबा, 500-700 करोड़ की मनुष्य आत्माओं में से 200 करोड़ तो गर्भ में ही रहती है। पर मुरली में बोला है कि कम से कम एक जन्म का सुख हर एक आत्मा को मिलता है।

बाबा- 600 (करोड़) आत्मार्ये गर्भ में रहती हैं? 600 करोड़ गर्भ में रहती हैं बाकी एक करोड़ ढेड़ करोड़ गर्भ में नहीं रहती?

¹ The rosary of victory.

² The rosary of Rudra

³ Parts of the body used to perform actions.

जिज्ञासु- ...500 करोड़।

बाबा- 500 करोड़ जो बोले हैं मोस्टली वो तो मनुष्य की कोटी के हैं जिनका मनन चिंतन मंथन चलता है। मन काम करता है मन-बुद्धि। बाकी 200 करोड़ तो ऐसे हैं जैसे कीड़े - मकोड़े। पतंगों के मिसल रात में आए और सवेरे को खलास। मनन-चिंतन-मंथन उनका जास्ती चलता ही नहीं है। इसीलिए जैसे कि वो मनुष्य की कोटी के हैं ही नहीं। इसीलिए मुरली में बोला है मोस्टली 500-550 करोड़ हैं मनुष्य और बाकी सब कीड़े-मकोड़े हैं।

Time: 06.01-07.57

Student: Baba, among the five-seven billion human souls, two billion [souls] remain just in the womb. However it is said in the murlis, every soul receives happiness at least for one birth.

Baba: Do six billion souls remain in the womb? [Do you mean to say] six billion [souls] remain in the womb, and the remaining one billion-one and a half billion don't remain in the womb?

Student: ...Five billion.

Baba: As regards the five billion [souls] that have been mentioned, most of them are of the category of human beings, who think and churn, whose mind and intellect works. Other than them the two billion [souls] are like insects and spiders. They are like moths; they come in the night and die in the morning. They certainly don't think and churn much. That is why, it is as if they are not in the category of human beings at all. This is why it is *mostly* said in the murlis: Five-five and a half billion [souls] are human beings and the rest are insects and spiders.

बैठ क्यों जाते हो जल्दी समझ में आ गई बात?

जिज्ञासु- थोड़ी-2 आइ है बाबा।

बाबा- तो पूरी बात जो नहीं (समझ में) आइ वो क्लियर कर लो।

जिज्ञासु- जो जानवर मिसल हैं...

बाबा- जानवर मिसल नहीं, पतंगे मिसल। जानवर की तो फिर भी लंबी आयु होती है।

जिज्ञासु- उनकी बुद्धि काम नहीं करती क्या बाबा?

बाबा- हाँ, कीड़े- मकोड़ों में कोई बुद्धि होती है? जानवरों में हाथी में देखो कितनी बुद्धि होती है फिर भी।

Why do you sit down soon, did you understand the concept?

Student: Baba, I understood it a little.

Baba: Then *clear* what you didn't understand completely.

Student: Those who are like animals...

Baba: Not like **animals** but like **moths**. An animal still has a long life span.

Student: Baba, doesn't their intellect work?

Baba: Yes, do insects and spiders have any intelligence? Look, among the animals an elephant still has so much intelligence!

समय: 8.00-10.06

जिज्ञासु:- आज मुरली में आया कि ड्रामा कल्याणकारी है। हमारे हाथ में एक रोज गंभीर चोट लग गया। इसमें क्या कल्याण है?

बाबा- अरे, तुम्हारा पूर्व जन्म का हिसाब-किताब नहीं है? पूर्व जन्म का हिसाब-किताब पूरा हो गया, हल्के हो गये कि भारी हो गये? क्यों?

जिज्ञासु:- हल्कापन नहीं लग रहा है।

बाबा- हल्कापन अभी नहीं लग रहा है, दर्द हो रहा है? ये भी हिसाब-किताब है। आखिर दर्द बंद होगा कि नहीं होगा? तो हल्का लगने लगेगा। पूर्व जन्मों की बात तो बार-2 भूल जाती है। नास्तिक धर्म वालों का इतना प्रभाव हो गया है... वो कहते हैं पुनर्जन्म होता ही नहीं। क्रिश्चियन, मुसलमान भी कहते हैं कि पुनर्जन्म होता ही नहीं, एक ही जन्म होता है। फिर कयामत में खुदा आकरके सबको कब्रदाखिल में से जगाता है तब फिर दूसरा जन्म होता है। और बाप ने हम बच्चों को आकरके, कल्प-2 आकरके पुनर्जन्म की बात बतायी कि तुम बच्चे अनेक जन्म लेते हो, 84 के चक्र में आते हो। अगर पुनर्जन्म की बात याद रहे तो ड्रामा याद रहेगा कि नहीं याद रहेगा। फिर प्रश्न ही पैदा नहीं होता ऐसा क्यों हुआ? हमको दुःख क्यों हो गया? कल्याणकारी है तो अकल्याण क्यों हो गया? शिवबाबा भी कल्याणकारी और ड्रामा भी कल्याणकारी और हमारे हाथ में जो चोट लगी ये पार्ट भी कल्याणकारी।

Time: 8.00-10.06

Student: It was mentioned in today's murli that the drama is beneficial. And one day, I suffered a serious injury in my hand. How is it beneficial?

Baba: Arey, don't you have karmic accounts of the past birth? When your karmic account of the past birth has been settled, did you become light or heavy? Why?

Student: I do not feel light.

Baba: You are not feeling light now. Are you experiencing pain? This also is a karmic account. Ultimately will the pain subside or not? Then you will start feeling light. You forget the topic of the past births again and again. The effect of the people of the atheist religion has increased so much... They say that there is no rebirth at all. The Christians and the Muslims also say that there is no rebirth at all, there is only one birth. Then, God (*Khudaa*) comes at the time of destruction (*qayaamat*) and wakes up everyone from the grave; it is then that another birth takes place. And the Father has come and narrated to us children the topic of rebirth cycle after cycle: you children have many births; you pass through the cycle of 84 births. If the topic of rebirth remains in the intellect, then will you remember *drama* or not? Then [this] question does not arise at all, 'Why did it happen like this? Why did I experience sorrow? If it is beneficial, why did [I] suffer harm?' Shivbaba as well as *drama* is beneficial and the injury that I suffered in my hand, this *part* is also beneficial. ☺

जिज्ञासु: अच्छा बाबा ये ठीक होगा या ऐसा ही रहेगा?

बाबा- क्या?

जिज्ञासु: जो हाथ में चोट लगी है।

बाबा- सारी दुनियां ठीक होगी कि नहीं ठीक होगी? अरे! सारी दुनियां ठीक होगी कि नहीं होगी?

जिज्ञासु: होगी।

बाबा- तो ये छोटी सी चीज ऐसी ही बनी रहेगी?

Student: *Acchaa*, Baba, will this become alright or will it remain as it is?

Baba: What?

Student: The injury that I have suffered in my hand.

Baba: Will the entire world improve or not? *Arey*, will the entire world improve or not?

Student: It will.

Baba: So, will this small thing remain as it is?

समय- 10.45-12.54

जिज्ञासु- बाबा, मुरली में बोला कि रूमाल खोया तो कभी खुद को भी खो देंगे।

बाबा- बिल्कुल, रूह का माल खो गया फिर क्या रह गया?

जिज्ञासु:- वो कैसे बाबा?

बाबा- कोई भी चीज़ खो जाती है तो खोने के संस्कार पक्के हो जाते हैं कि नहीं? संगमयुग में तो एलर्ट रहना चाहिए या अलबेला रहना चाहिए? अलबेलेपन के संस्कार संगमयुग में आये माना 84 जन्मों का खाता बिगड़ गया। हर समय एलर्ट रहना चाहिए। जो भी चीज़ हमको मिली हुई है वो यज्ञ की चीज़ है या हमारी अपनी चीज़ है? क्या समझना है? हमारे पास दो रुपये भी हैं तो किसके लिए हैं? यज्ञ के लिए हैं या हमारे अपने लिए हैं? यज्ञ की चीज़ है। और यज्ञ का कणा-दाना...। वो तो रूमाल है फिर भी उसकी पांच रुपये कीमत है। और यज्ञ में एक चावल का दाना उसकी कीमत कितनी है? कम कीमत बताई कि ज्यादा बताई? यज्ञ के कणे-दाने की भी बहुत कीमत है। उसकी भी संभाल करनी चाहिए। बर्बाद नहीं करना चाहिए।

Time: 10.45-12.54

Student: Baba, it has been said in a murli that if you lose your handkerchief (*ruumaal*), then you will also lose yourself one day.

Baba: Definitely. If you lose the *maal* (property) of the *ruuh* (soul), what else remains?

Student: Baba, how is that?

Baba: If you lose anything, do the *sanskaars* of losing [things] become firm or not? Should you be *alert* in the Confluence Age or should you be careless? If you have the *sanskaars* of carelessness, it means that your account of 84 births has spoilt. You should remain *alert* all the time. Whatever we have received, does it belongs to the *yagya* or does it belong to us? What should we think? Even if we have two rupees, for what purpose is it meant? Is it for the *yagya* or for our self? It belongs to the *yagya*. And every grain of the *yagya*... That is a

handkerchief; it still costs five rupees; and what is the cost of a grain of rice in the *yagya*? Was it said to be of less value or more [value]? Even a grain of the *yagya* is very valuable; it should also be taken care of. It should not be wasted.

तो रूमाल तो बहुत बड़ी चीज हो गयी। और हृद के रूमाल की बात नहीं है। बेहद का भी रूमाल होता है। क्या? रूह माना क्या? आत्मा और आत्मा का माल... माल क्या होता है? प्यूरिटी। आत्मा में जितनी प्यूरिटी होगी समझो बहुत मान-मर्तबा भर गया। जितनी प्यूरिटी बढ़ती जावेगी उतनी मान-मर्तबा बढ़ता जावेगा। रूह का माल बर्बाद नहीं करना चाहिए।

So, a handkerchief is a very big thing; and it is not about a limited handkerchief. There is an unlimited handkerchief (*ruumaal*) as well. What? What is meant by *ruuh*? Soul. And what is the *maal* (property) of the soul? *Purity*. The more *purity* a soul has, consider that the more respect and honour is contained in it. The more the *purity* increases, the more its respect and honour will increase. One should not waste the property of the soul.

समय- 13.02-16.05

जिजासु- बाबा, मुरली में बोला है कि मधुबन में बाबा स्वयं दौड़ी पहन कर आते हैं।

बाबा- हाँ! जहाँ मधु है और जहाँ बन है...। मधु माना बेहद की मिठास वृत्ति है। वायब्रेशन में मिठास भरा हुआ है। वाणी में मिठास भरा हुआ है। आपस के जो संकल्प का लेन-देन होता है उनमें मिठास भरा हुआ है। तो वहाँ बाबा आवेंगे। और क्या कडुआ बोल बोलने वालों के बीच में आवेंगे? कडुआ बोल देहअभिमानि बोलते हैं कि आत्माअभिमानि बोलते हैं? देहअभिमानि कडुआ बोल बोलेंगे। देहअभिमानि बच्चों के बीच में बाप क्यों आवेगा? मैं तो बात भी नहीं करता हूँ। शिवबाबा क्या कहते हैं? मैं किससे बात करता हूँ? मैं अपने आत्मा रूपी बच्चों से बात करता हूँ। जो देहअभिमान में रहते हैं, मान-मर्तबा में रहते हैं उनसे तो मैं बात भी नहीं करता हूँ। आगे चलके बिल्कुल ही बात करना बंद कर दूँगा।

Time: 13.02-16.05

Student: Baba, it has been said in a murlī that Baba himself comes running to Madhuban.

Baba: Yes. The place where there is *madhu* (honey) and *ban* (forest)... *Madhu* means the place where there are the unlimited vibrations of sweetness. There is sweetness in the vibrations. There is sweetness in the words. There is sweetness in the exchange of thoughts with each other. Baba will come there. Or will He come among those who speak bitterly? Do the body conscious people speak bitterly or do the soul conscious people speak bitterly? The body conscious people will speak bitterly. Why will the Father come among the body conscious children? I do not even talk [to them]. What does Shivbaba say? With whom do I talk? I speak to My soul like children. I do not even talk to those who remain in body consciousness, in [the ego of] their respect and position. I will completely stop talking to them in future.

जिज्ञासु- देहअभिमनियों से बाबा?

बाबा- देहभान वालों से बात करना बंद कर दूँगा। आत्माभिमानि बच्चों से बात करूँगा। अभी भी ऐसे ही हैं। रूहानी बाप रूहानी बच्चों से बात करते हैं। तो मधुबन में... मिठास वृत्ति है वहाँ मधुबन है। जहाँ बेहद की बन की तरह, जंगल की तरह वैराग्य वृत्ति है वहाँ मधुबन है। मिठास वृत्ति भी हो और साथ-2 वैराग्य वृत्ति भी हो। तो जिन-2 आत्माओं के संगठन में बेहद की वैराग्य वृत्ति, बेहद की मिठास वृत्ति है वहाँ-2 संगठन में मधुबन में मैं आता हूँ और दौड़ी पहनके आता हूँ क्या? अपने आप दौड़ के आता हूँ। बुलाने की दरकार, मुख से बुलाने की, झाँझ-मंजीरा बजाने की दरकार नहीं है। कहते हैं बाबा आप यहाँ क्यों नहीं आते? यहाँ देर से क्यों आते हो? उसका कारण क्या बताया? जरूर संगठन में कड़ुवे बोल चल रहे हैं, जरूर संगठन में लगाव-झुकाव की बीमारी चल रही है। इसलिए बाबा का आना नहीं होता है जल्दी-2। बढ़िया प्रश्न करते हो।

जिज्ञासु- बाबा, मुरली के पोइन्ट्स हैं।

बाबा- मुरली के पोइन्ट और निकालो। मुरली के पोइन्ट समझने-समझाने के लिए ही होते हैं। और काहे के लिए होते हैं? ज्ञान रतन हैं। गहराई में घुसो। सागर की गहराई में घुसते हैं तो रतन बढ़िया-2 मिलते हैं।

Student: Baba, with the body conscious ones?

Baba: I will stop talking to those with body consciousness. I will talk to the soul conscious children. Even now it is like this. The spiritual Father talks to the spiritual children. So, the place where there are vibrations of sweetness is Madhuban. The place where there are vibrations of detachment like an unlimited forest there is Madhuban. There should be the vibrations of sweetness and along with that there should be the vibrations of detachment too. So, the gathering of the souls where there are the vibrations of unlimited detachment and unlimited sweetness I come to such gathering, Madhuban and I come running. What? I come running on my own. There is no need to call Me, to call through the mouth; there is no need to play cymbals etc. [People] say, 'Baba why don't you come here? Why do you come to this place after such a long time?' What was the reason mentioned for that? Definitely bitter words are being spoken in that gathering; definitely there is some disease of attachment and inclination in that gathering. This is why Baba does not go there frequently. You ask nice questions.

Student: Baba, these are points of murli.

Baba: Extract more points from the murli. Murli points are meant only for understanding and explaining. What else are they meant for? These are the gems of knowledge. Go deep into it; when you dive deep into the ocean, you get nice gems.

समय- 16.09-17.55

जिज्ञासु- बाबा, मुरली में आता है - ब्रह्मा, विष्णु, शंकर भी वर्थ नाट ए पेनी हैं।

बाबा- और क्या? शिवबाबा के मुकाबले शंकर वर्थ नाट ए पेनी है। शिवबाबा और शंकर ताऊ - ये दोनों अलग-2 हैं कि एक ही एक हैं? बोलो। शिव जयन्ती गाई जाती है या शंकर जयन्ती

गाई जाती है? वैल्यूएबल गाया जायेगा या वर्थ नाट ए पेनी गाया जावेगा? तो शंकर की जयन्ती जैसे वर्थ नाट ए पेनी और शिवबाबा की जयन्ती वर्थ पाउंड। शिव आत्मा अलग और शंकर आत्मा अलग। जयन्ती माना प्रत्यक्ष होना। शंकर जयन्ती तो ब्रह्माकुमारियां भी जान जाती हैं। शंकर आया, शंकर आया, शंकर पार्टी आयी। उनकी बुद्धि में भी बैठ जाती है बात कि शंकर पार्टी वाले आ गये। शंकर पार्टी वाले आ गये माना? शंकर पार्टी कहां से निकली होगी? शंकर से ही निकली होगी। तो ये तो उनकी बुद्धि में भी बैठ जाता है। लेकिन शिवबाबा के बच्चे आ गये, ये उनकी बुद्धि में बैठता ही नहीं। तो शिवजयंती संसार में हो जाये, ब्रह्माकुमार-कुमारियों के बीच में हो जाये, सब धर्म वाले इस बात को जान लें वो निराकार शिव, सबका बाप गॉड फादर आया हुआ है। ये बड़ी बात है। ये वर्थ पाउंड जयन्ती है।

Time: 16.09 -17.55

Student: Baba, it is mentioned in the murli that Brahma, Vishnu and Shankar are also worth not a penny.

Baba: Is it not so? When compared to Shivbaba, Shankar is *worth not a penny*. Shivbaba and Shankar *Tau* (father's elder brother), are both of them separate or are they one and the same? Speak up; is Shiva *jayanti* (the birthday of Shiva) famous or is Shankar *jayanti* (the birthday of Shankar) famous? Will a *valuable* one be praised or the one who is *worth not a penny* be praised? So, Shankar's *jayanti* is *worth not a penny* and Shivbaba's *jayanti* is *worth pound*. The soul Shiva is different and the soul Shankar is different. *Jayanti* means to be revealed. Even Brahmakumaris know about Shankar *jayanti*. [They keep on saying:] Shankar has come, Shankar has come; Shankar *party* has come. [This] topic sits even in their intellect that the people of the Shankar *Party* have come. What is meant by 'the people of Shankar Party have come'? From where must the Shankar *Party* have emerged? It must have emerged from Shankar alone. So, this sits in their intellect as well. But it does not sit in their intellect that Shivbaba's children have come. So, Shiva *jayanti* should take place in the world, in front of Brahmakumar-kumaris. The people of all the religions should know that the incorporeal Shiva, who is everybody's Father, *God the Father* has come, this is the big deal. This is *worth pound jayanti*.

समय-17.59-19.29

जिज्ञासु:- बाबा, जो मुरलियाँ हैं, मुरलियों की एक-2 कॉपी करोड़ों में छपेगी। टी.वी. में, अखबारों में होगा कि बाबा आया हुआ है। तो ये कब होगा?

बाबा- कोई बड़ा आदमी चारों तरफ जिसकी शोहरत हो जाती है वो कुछ बोलता है तो अखबारों में नहीं छप जाता है? तो अखबार लाखों करोड़ों की तादाद में छपते हैं या थोड़ी तादाद में छपते हैं? (जिज्ञासु ने कुछ कहा।) तो ऐसे होगा। यह कोई बड़ी बात हो गयी?

जिज्ञासु- कब तक?

बाबा- अहँ! अभी तो बताया - बच्चे के द्वारा बाप की प्रत्यक्षता होती है। बच्चे की जयंती कौन-सी? कितने दिन हो गये भट्टी किये हुए? भट्टी किये हुए कितना टाइम हुआ?

जिज्ञासु -दो साल।

बाबा- दो साल हो गए। दो साल में रोज मुरली सुनना चाहिए। तो सारी बात बुद्धि में आ जाए। कृष्ण बच्चे की जयंती बताई या नहीं बताई? 2018 में कृष्णजयंती। तो जब कृष्णजयंती है तो बच्चे के साथ बाप की जयंती तो है ही है। बाप किसके द्वारा प्रत्यक्ष होते हैं? बच्चों के द्वारा प्रत्यक्ष होते हैं। बच्चों में अक्वल नंबर बच्चा कौन? कृष्ण बच्चा। एक के पावन बनने से सब पावन बन जाते हैं। एक के पतित बनने से सब पतित बन जाते हैं।

Time: 17.59-19.29

Student: Baba, crores (millions) of copies of every murli will be published. Baba, it will be known through TV, newspapers that Baba has come. So, when will that happen?

Baba: When a big personality, who becomes famous everywhere speaks something, is it not published in the newspapers? So, are the newspapers published in lakhs (hundred thousands) and crores (millions) or in small numbers? (Someone said something.) So, it will happen like this. Is it a big deal?

Student: Till when?

Baba: Eh! Just now it was said that the Father is revealed through the child. Which is the child's *jayanti*? How many days have passed since you did the *bhatti*? How much time has passed after you did the *bhatti*?

Student: Two years.

Baba: Two years have passed. You should have listened to the murlis daily during the two years. Then, everything would have sat in the intellect. Is it mentioned about the *jayanti* of the child Krishna or not? Krishna *jayanti* takes place in 2018. So, when there is Krishna *jayanti*, then the Father's *jayanti* certainly takes place along with the [*jayanti* of the] child. Through whom is the Father revealed? He is revealed through the children. Who is the No.1 child among the children? The child Krishna. When one becomes pure, then everyone becomes pure. When one becomes sinful, then everyone becomes sinful.

समय-19.47-20.57

जिज्ञासु:- बाबा, शास्त्रों में भी है कि कौरव, पाण्डव दिन में लड़ते थे।

बाबा- हाँ, दिन में लड़ते थे।

जिज्ञासु- रात को खीरखण्ड हो जाते थे।

बाबा- रात को खीरखण्ड हो जाते थे।

जिज्ञासु- सोचते थे हमारे में तो क्रोध का अंश आ गया।

बाबा- हाँ।

जिज्ञासु- बाबा हम आपसे माफी माँगते हैं। इसका क्या अर्थ हुआ बाबा ?

बाबा- इसका अर्थ ये हुआ कि जब रात होती है तो माना अज्ञान की रात हो जाती है। बुद्धि में अज्ञान आता है तब आपस में लड़ते हैं या बुद्धि में ज्ञान आता है कि हम आत्मा-2 भाई-2 हैं तब आपस में लड़ाई लड़ते हैं? आत्मा की बिन्दी और ड्रामा की बिन्दी अगर बुद्धि में रहे तो ज्ञान है या अज्ञान है? ज्ञान है। तो दिन में लड़ते थे। क्या? जब (स्वधर्मी और विधर्मी का) ज्ञान आता है तो लड़ते थे और जब अज्ञानी हो जाते हैं तो लड़ाई की तो बात ही नहीं।

अज्ञान में तो अंधेरा ही अंधेरा है। ब्रह्मा की रात सो ब्राह्मणों की भी रात। ब्रह्मा का दिन तो ब्राह्मणों का भी दिन।

Time: 19.47-20.57

Student: Baba, it is mentioned in the scriptures as well that Kauravas and Pandavas used to fight in the day.

Baba: Yes, they used to fight in the day time.

Student: And they used to live in harmony, in the night.

Baba: They used to live in harmony, in the night.

Student: They used to think that a trace of anger entered us.

Baba: Yes.

Student: Baba, I seek your pardon. What does this mean?

Baba: It means that when the night falls, the night of ignorance falls. Do they fight when ignorance fills the intellect or do they fight amongst themselves when the knowledge enters the intellect: 'we are brother like souls among ourselves'? If the point of soul and the point of the *drama* remains in the intellect, then is it knowledge or ignorance? It is knowledge. So, they used to fight in the day. What? When there is the knowledge [about who is a *swadharmi*⁴ and who is a *vidharmi*⁵], then they fought and when they become ignorant then there is no question of fight at all. There is darkness and only darkness in ignorance. Brahma's night is the Brahmins' night as well. Brahma's day is the Brahmins' day as well.

समय-21.07-23.45

जिज्ञासु- बनी बनाई बन रही है।

बाबा- हाँ।

जिज्ञासु- और इस समय जैसा पुरुषार्थ करेंगे कल्प-2 नूँध हो जाएगा।

बाबा- बनी-बनाई बन रही अब कुछ बननी नाए, चिन्ता ताकि कीजिए जो अनहोनी होय। तो अब इसमें प्रश्न क्या पैदा होता है? (जिज्ञासु ने कुछ कहा।) कैसा पुरुषार्थ करें? तो जो बनी बनाई बन रही है उसके बारे में ज्ञान है कि क्या बन रही है? बनी बनाई कितने जन्मों में बनी? कितने जन्मों में बनती है और बिगड़ती है?

जिज्ञासु- 63 जन्मों में।

बाबा- 63 जन्मों में बनती भी है और 63 जन्मों में बिगड़ती भी है। तो वो बनी बनाई बन रही है अब कुछ नई तो बननी है नहीं। माना 63 जन्मों में हमने जितने अच्छे कर्म किये हैं, दूसरी आत्माओं को जितना सुख दिया है, अच्छे कर्म करके अपनी प्रारब्ध बनाई है, पुण्य का खाता बनाया है वो ही हमारा रील में उदय हो रहा है। हमको अच्छे कर्म करने देगा, श्रीमत पर चलने देगा, श्रीमत के पट्टे से नीचे नहीं उतरने देगा तो इसलिए बनी-बनाई बन रही है, परन्तु उसके बारे में मालूम नहीं है हमको।

⁴ Those who follow the Father's religion

⁵ Those who follow a religion opposite to the Father's religion

Time: 21.07-23.45

Student: Whatever is predetermined is being enacted.

Baba: Yes.

Student: And as is the *purushaarth* (spiritual effort) that we make now, our [part] for many cycles will be fixed [accordingly].

Baba: Whatever is pre-determined is being enacted; nothing new is to be enacted now. Worry about something that hasn't happened. So, what question arises in this now? (The student said something.) What kind of *purushaarth* should we make? So, the predetermined [drama] that is being enacted; do you know about what is pre-determined? Whatever is predetermined; it was fixed in how many births? In how many births is it fixed and spoiled?

Student: In the 63 births.

Baba: It is fixed as well as spoiled in the 63 births. So, whatever is predetermined is being enacted. Nothing new is to be enacted now. It means that whatever good actions we have performed in the 63 births, to whatever extent we have given happiness to the other souls, whatever fruits we have earned by performing good actions, whatever account of noble actions we have made, that itself is emerging in our *reel*. It will allow us to perform good actions, it will allow us to follow shrimat, it will not allow us to step down from the track of shrimat. This is why whatever is predetermined is being enacted. But we do not know about it.

दूसरा जिज्ञासु - बाबा इस जन्म में जो हम पुरुषार्थ कर रहे हैं उसका क्या होगा?

बाबा- इस जन्म में जो हम पुरुषार्थ करें, वो हमें मालूम है कि हमने क्या बनाई है? रील उदय हो रही है। टाइम की रील जो है वो उघड़ती जा रही है लेकिन पूर्व जन्म में हमने क्या-2 कर्म किये हैं वो पता है? जब वो रील उदय हो जाती है हम अच्छा पुरुषार्थ करना चाहते हैं। और फिर खराब संकल्प लगातार आते हैं तो इससे क्या साबित होता है कि हमने अच्छा कर्म किया है या बुरा कर्म किया है? बुरे कर्म किये हैं तो रील खराब उदय हो रही है। अब इतना हमने जान लिया है कि जब पुरुषार्थ हमारा नीचा होता है, बहुत मेहनत करने पर भी पुरुषार्थ नहीं सुधरता है इससे साबित है कि हमने बुरे कर्म किये हैं। तो बुरी रील उदय हो रही है। इसलिए हमें क्या करना चाहिए? और तीखा पुरुषार्थ करना चाहिए। सारी दुनियांदारी छोड़-छाड़ करके एक ही तरफ बुद्धि लगाय देना चाहिए। आखरीन एक जैसा समय तो कभी किसी का रहता ही नहीं।

Another student: Baba, what about the *purushaarth* that we are making in this birth?

Baba: The *purushaarth* that we do in this birth... do we know what is predetermined for us? The *reel* is emerging; the *reel of time* is unwinding. But do we know what actions we have performed in the past births? When that *reel* emerges we wish to make good *purushaarth* and then bad thoughts emerge in our mind continuously; then what does it prove? Have we have performed good actions or bad actions? We have performed bad actions so, a bad *reel* is emerging. Now we have come to know this much that when our *purushaarth* is low, the *purushaarth* does not improve despite working very hard. It proves that we have performed bad actions; so, a bad *reel* is emerging. This is why what should we do? We should make even more intense *purushaarth*. We should leave all the worldly affairs (*duniyaadaari*) and

focus our intellect towards only the One. Ultimately, the time never remains the same for anyone at all.

समय-23.47-26.49

जिजासु- बाबा, मुरली में बोला है कि सूर्य जब निकलता है तो उसकी तपत होती है। बाबा- हाँ। सूरज जब निकलता है और निकलता ही चला जाता है, ऊपर चढ़ता ही चला जाता है तो गर्मी बढ़ेगी या घटेगी? गर्मी बढ़ती है। यहाँ कौनसी गर्मी की बात है? यहाँ ज्ञान की गर्मी बढ़ती चली जाती है। जो सिक्ख लोग ठस बुद्धि वाले हैं उनकी बुद्धि में ज्ञान उतना बैठता ही नहीं है। क्योंकि आते ही हैं कलियुग के मध्य भाग में। उनकी बुद्धि में भी ज्ञान अच्छी तरह बैठ जाता है। वो भी भगवान को पहचान लेते हैं क्योंकि सूरज कहाँ पहुँच जाता है? दोपहर के 12 बजे कहाँ पहुँचता है सूरज? एकदम शिखर पर, सर के ऊपर आ जाता है। तो ज्यादा तपत बढ़ेगी ज्ञान की तो अर्जुन भी क्या कहेगा? बस, बस, बस बंद करो। हजारों सूर्या की तपत हम नहीं सहन कर पायेंगे। अभी तो साधारण-2 ज्ञान की बातें सुनाते हैं। छोटे-2 बच्चों को लोरी सुनाई जाती है या तीखी-2 ज्ञान की बातें सुनाई जाती है? लोरी सुनाई जाती है। आगे चलके ऐसी-2 बातें सुनावेंगे जो धरी-धराई... हम समझते हैं कि ये तो हमारी सारी बातें गुप्त हैं। क्या? कोई नहीं जानता हमने क्या किया। पोतामेल नहीं दिया तो कोई हर्जा नहीं। लेकिन वो भी बाबा ऐसी बात सुनावेंगे सारी बात क्लीयर हो जावेगी उघड़के बाहर आ जायेगी। छुपेगी ही नहीं। कितना भी छुपाना चाहें तो भी नहीं छुपेगी।

Time: 23.47-26.49

Student: Baba, it has been said in the murli that when the Sun rises, it is very hot.

Baba: Yes. When the Sun rises and goes on rising, goes on rising up, will the heat increase or will it decrease? The heat increases. It is about which heat here? Here the heat of knowledge goes on increasing. The Sikhs who have a dull intellect, knowledge does not sit in their intellect much, because they do come in the middle of the Iron Age; the knowledge sits even in their intellect properly [and] they too recognize God. It is because where does the Sun reach? Where does the Sun reach at 12 in the noon? It reaches the pinnacle, it comes above head. So, when the heat of knowledge increases what will Arjun say, too? [He will say:] Enough, enough, enough. Stop it. I will not be able to tolerate the heat of thousands of Suns. Now He narrates simple topics of knowledge. Are lullabies narrated to small children or are sharp points of knowledge narrated to them? Lullabies are narrated to them. Such topics will be narrated in future that whatever is hidden... we feel that all our deeds are hidden; anyone doesn't know what we have done. It doesn't matter if we haven't given *potaamail*⁶. But even that...Baba will narrate such things that everything will be *clear* and everything will come out. It will not be hidden at all. It cannot be hidden however much someone may try to hide it.

⁶ A letter to Baba containing the accounts of the secrets and weakness of one's mind, body and wealth.

जैसे अभी कहते हैं मधुबन है शीशे का महल। शीशे के महल में खड़े हो जाओ तो अपना चेहरा भी देख लो और दूसरों का चेहरा भी देख लो। लेकिन सबसे बड़ा शीशा कौन सा है? बाप। सबसे बड़ा आरसी है बाप। तो आगे चलके ये सबसे बड़ा आरसी संसार में प्रत्यक्ष हो जायेगा। इसलिए मुरली में बोला कि कोई ऐसे न समझे कि हमारी गुप्त रह जावेगी। नहीं, कोई का कुछ भी गुप्त रहने वाला नहीं है। हर एक का सब कुछ प्रत्यक्ष हो जावेगा। जितना ही छुपाना चाहेंगे उतना और ज्यादा उघड़ना। बड़ी मुसीबत। जब होया तब देखी जईये।

Just like, He says now that Madhuban is a palace of mirrors (*shiiishe kaa mahal*). If you stand in the palace of mirrors you will be able to see your face as well as the face of others. But which is the biggest mirror (*shiiishaa*)? The Father. The Father is the biggest mirror (*aarsi*). So, this biggest mirror will be revealed in the world in future. This is why it has been said in the murlī that nobody should think that their [secrets] will remain hidden. No, nothing of anyone is going to remain hidden. Everything of everyone will be revealed. However much someone tries to hide it, it will be revealed even more. [It has become] a big problem. (Ironically :) We will see when it happens.

समय- 26.52-29.32

जिज्ञासु- बाबा, कल्प-2 के लिये नूँध हो जाता है जैसा हम करेंगे इस समय।

बाबा- कल्प-2 के लिए नूँध हो जाता है।

जिज्ञासु- इसका मतलब क्या है?

बाबा- इसका मतलब क्या है?

जिज्ञासु- समझ नहीं पाते बाबा।

बाबा- अभी जो बात पूछी...

जिज्ञासु- बनी-बनाई बन रही...

बाबा- बनी-बनाई बन रही उसी से कनेक्टेड बात है। जो बनी बनाई बन रही है उसके बारे में हमें पता थोड़े ही है कि हमने क्या बनी बनाई बनाई है। 63 जन्मों के बारे में हमने क्या बनाया है वो हमें पता ही नहीं है। वो रील में जब सामने आता है तो हम ज्ञान की दृष्टि से पहचान सकते हैं कि हमने अच्छा किया या बुरा किया ? वो भी अभी गहराई से नहीं जान पाते । जब मनन-चिंतन-मंथन गहराई से चलेगा तो हमारी 84 जन्मों की हिस्ट्री हमको खुलने लग पड़ेगी। तो वैसा ही हम करेंगे जैसा 63 जन्मों में किया। फिर बार-2 हरेक कल्प के आदि में ऐसा ही करेंगे। इसलिए कहने में आता है कि कल्प-2 का नूँध हो जाता है।

Time: 26.52-29.32

Student: Whatever we do at present is recorded for many cycles.

Baba: It becomes fixed for many cycles.

Student: What does it mean?

Baba: What does it mean?

Student: I am unable to understand Baba.

Baba: The thing that you asked now...

Student: Whatever is pre-determined is being enacted...

Baba: Whatever is predetermined is being enacted.... This is *connected* to it. Whatever is predetermined is being enacted; we don't know about what we have recorded [in the past births] which is pre-determined. We do not at all know what we have recorded for 63 births. When that comes in front of us in the *reel*, then we can recognize from the point of view of knowledge whether we have done good or bad. That too, we are not able to know it deeply now. When the thinking and churning takes place deeply then the *history* of our 84 births will start being revealed. So, we will do exactly what we did in the 63 births. Then, we will do the same thing again and again in the beginning of every cycle. This is why it is said that it becomes fixed for many cycles.

दूसरा जिज्ञासु- बाबा जो नूंध हुआ है उसको तो चेंज भी कर सकते हैं ना। मुरली में बोला है कि संगमयुग में तकदीर की रेखा परिवर्तन करने का युग है।

बाबा- पुरुषोत्तम संगमयुग?

दूसरा जिज्ञासु- इसमें तकदीर के रेखा बदल सकते हैं।

बाबा- बदल सकते हो।

दूसरा जिज्ञासु- जो नूंध है वो तो चेंज कर सकते हैं ना।

बाबा- नूंध है वो तुम्हें पता है? 83 जन्मों का तुमको पता है? 84वें जन्म में भी जो इतना बीत चुका है उतना ही तो पता है। अभी आगे क्या होने वाला है इस 84वें जन्म में वो तुमको पता है?

दूसरा जिज्ञासु- नहीं।

बाबा- फिर? हमको तो कुछ भी पता नहीं है। जब पता ही नहीं है तो ज्ञान की चाबी हमारे हाथ में दी हुई है कि ऐसा कर्म करोगे तो ऐसा मिलेगा, ऐसा कर्म करोगे तो वैसा मिलेगा। मुट्टी में है तकदीर हमारी। मुट्टी कौनसी है? ये बुद्धि रूपी मुट्टी है। इसमें ज्ञान मिला हुआ है। श्रीमत के अनुकूल कर्म करेंगे तो जन्म-जन्मान्तर सुखी रहेंगे। श्रीमत के बरखिलाफ मनमत पर या मनुष्यों की मत पर कर्म करेंगे तो दुखी हो जावेंगे।

Another Student: Baba, we can even change whatever has been fixed, can't we? It has been said in the murlī that the Confluence Age is the age when the line of fortune can be changed.

Baba: The Elevated Confluence Age?

The other student: We can change the line of fortune.

Baba: You can change it.

The other student: So, we can change whatever has been fixed, can't we?

Baba: Do you know what is fixed? Do you know about the 83 births? Even in case of the 84th birth you know only about whatever has passed. Do you know what is going to happen in future in this 84th birth?

The other student: No.

Baba: Then? We don't know anything at all. When we don't know at all, then the key of knowledge has been given in our hands that if you perform actions like this, you will get [fruits] like this and if you perform actions like that, you will get [fruits] like that. Our fortune

(*takdiir*) is in our fist (*mutthii*). What is the fist? This is our fist like intellect. We have received knowledge in it. If you act in accordance with shrimat, you will remain happy for many births. If you act against the shrimat, if you act according to the directions of the mind or the directions of human beings, you will become sorrowful.

समय-29.41-32.18

जिज्ञासु- बाबा, मुरली में बोला है जब पिछाड़ी होगी तब तुम यहाँ आकर रहेंगे।

बाबा- हाँ। यहाँ माने कहाँ? बाबा यहाँ किसको कहते हैं और वहाँ किसको कहते हैं? यहाँ माना नज़दीक और वहाँ माने दूर। शिवबाबा के लिए सबसे नज़दीक से नज़दीक क्या है? यहाँ माने शिवबाबा कहीं का रहने वाला है कि नहीं? कहाँ का रहने वाला है?

जिज्ञासु- परमधाम।

Time: 29.41-32.18

Student: Baba, it has been said in the murli that in the end you will come and stay here.

Baba: Yes. 'Here' means 'where'? Which place does Baba refer to as 'here' and which place does He refer as 'there'? 'Here' means near and 'there' means far. What is the closest for Shivbaba? 'Here' means... Does Shivbaba reside anywhere or not? He is a resident of which place?

Student: The Supreme Abode (*Paramdhaam*).

बाबा - परमधाम का रहने वाला है। तो शिवबाबा यहाँ किसको कहते हैं? परमधाम को यहाँ कहते हैं। मधुबन भी परमधाम बन जाते हैं क्या? जहाँ बेहद की मिठास वृत्ति बेहद की वैराग्य वृत्ति होती है वो भी परमधाम का रूप है। तुम बच्चे परमधाम को इस सृष्टि पर उतार लेंगे। तो यहाँ हो गया। यहाँ माने जहाँ वाणी चलाते हैं वो मधुबन का रूप हो गया। अभी ये हद का मधुबन है या बेहद का मधुबन है? बाप कहाँ आवेंगे? मधुबन में ही आवेंगे या कहीं दूसरी जगह आवेंगे? बाप तो मधुबन में ही आवेंगे। तो ज़रूर जहाँ आवेंगे वहाँ बेहद की मिठास वृत्ति वाले इकट्ठे हो रहे हैं और बेहद की वैराग्य वृत्ति वाले इकट्ठे हो रहे हैं। आया समझ में?

जिज्ञासु- जब पिछाड़ी होगी तब तुम यहां आकर रहेंगे।

बाबा- यहाँ आके रहेंगे माना तुम बच्चे परमधाम को इस सृष्टि पर उतार लेंगे। इसका क्या मतलब हुआ? यानि इसी सृष्टि पर कोई ब्राह्मणों का ऐसा संगठन होगा, महासंगठन कहो, महा मधुबन कहो, जहाँ सब बीज रूप आत्मार्ये इकट्ठी हो जावेंगी। संकल्पों के बीज में इकट्ठी हो जावेंगे। एकाग्र चित्त बन जावेंगे। वायब्रेशन से ही सारी बात होगी। उन्हें वाचा भी चलाने की दरकार नहीं होगी। वाणी से परे वो निर्वाणधाम बन जायेगा साकार में। उसको बोला यहाँ। आया समझ में? वो स्थान कौनसा होगा? माउण्ट आबू।

Baba: He is a resident of the Supreme Abode. So, which place does Shivbaba refer to as 'here'? He refers to the Supreme Abode as 'here'. Madhuban also become the Supreme

Abode. What? The place where there are the vibrations of unlimited sweetness and unlimited detachment is also the form of the Supreme Abode. You children will bring the Supreme Abode down to this world. So, that's 'here'. 'Here' means the place where the vani is narrated; it is the form of Madhuban. Now, is it a limited Madhuban or an unlimited Madhuban? Where will the Father come? Will He come only in Madhuban or any other place? The Father will come only in Madhuban. So, definitely the people with vibrations of unlimited sweetness and unlimited detachment are gathering here. Did you understand?

Student: When the last period comes, then you will come and stay here.

Baba: You will come and stay 'here' means ... You children will bring the Supreme Abode down to this world. What does it mean? It means that there will be the gathering of some Brahmins here, in this very world - call it *mahaasangathan* (mega-gathering), call it *mahaamadhuban* (big Madhuban) - where all the seed form souls will gather. They will gather [in the form of] the seed of thoughts. They will become the ones with a focused intellect. The entire conversation will take place through vibrations itself. There will not be any need for them to speak either. It will become *Nirvaandhaam* beyond speech in a corporeal form. It is referred to as 'here'. Did you understand? Which place will that be? Mount Abu.

समय-32.24-32.54

जिज्ञासु- जो पक्के योगी होंगे वही आ सकेंगे।

बाबा- हाँ, जो पक्के योगी होंगे वही आ सकेंगे यहाँ।

जिज्ञासु- भोगी तो थोड़ा ठक्का सुनने से खत्म हो जावेंगे।

बाबा- भोगियों की तो हवा निकल जायेगी। जिनकी कर्मन्द्रियाँ भी योगयुक्त होंगी वो ही यहाँ आवेंगे। यहाँ माने कहाँ? साकार परमधाम में।

Time: 32.24-32.54

Student: Only the ones who are firm *yogis* will be able to come.

Baba: Yes, only those who are the firm *yogis* will be able to come here.

Student: *Bhogis* (pleasure seekers) will be destroyed when they hear about a minor dispute [in the *yagya*].

Baba: The *bhogis* will be finished⁷. The ones whose *karmendriya*⁸ will also be *yogyukt* (full of [the power of] yoga), only they will come here. 'Here' refers to which place? The corporeal Supreme Abode.

समय-33.03-38.03

जिज्ञासु:- बाबा, यू.पी. में कम आते हैं।

बाबा- यू.पी. में कम आते हैं? जब यू.पी. में सम्पूर्ण प्रत्यक्षता हो जानी है तो सम्पूर्ण आ जावेंगे कि कम आवेंगे? (जिज्ञासु ने कुछ कहा।) हाँ, तब तो सम्पूर्ण आ जावेंगे ना। अभी भी प्रत्यक्षता कहाँ हुई है? विदेश में हुई है या यू.पी. में हुई है?

⁷ They will lose faith

⁸ Parts of the body used to perform actions.

जिज्ञासु- अन्य स्टेट की अपेक्षा यू.पी. में कम आते हैं।

बाबा- कम आते हैं? यहाँ जो प्रत्यक्षता थक्के में हो गयी सो? अखबारों में हो गयी सो? ऐसी प्रत्यक्षता क्या विदेश में हुई है क्या? अरे? कृष्ण के दो जन्म हुए; संगमयुगी कृष्ण। संगमयुगी कृष्ण ब्राह्मण है या नहीं है? तो ब्राह्मणों के दो जन्म होते हैं? द्वापरयुगी शूटिंग में कृष्ण का जन्म दिखाए है। द्वापर के अंत में कृष्ण हुआ। तो एक तो वो जन्म हो गया। दूसरा जन्म वो है जब यज्ञोपवीत होता है। तो 2018 में दूसरा जन्म भी हो गया। तो पक्का-2 द्विज हो गया ना। तो आधे से ज्यादा प्रत्यक्षता यू.पी. में हो गयी कि विदेश में हुई? विदेश वालों की बुद्धि कहाँ धरी रहती है?

जिज्ञासु:- भारत में।

बाबा- भारत में भी कहाँ धरी रहती है? यू.पी. में।

Time: 33.03-38.03

Student: Baba comes less frequently to U.P.

Baba: He comes less frequently to U.P? When the complete revelation takes place in U.P. then will He come completely or less frequently? (The student said something.) Yes, then He will come completely, will He not? Even now where has the revelation taken place? Has it taken place abroad (*videsh*) or in U.P.?

Student: When compared to the other states He comes less frequently to U.P.

Baba: He comes less frequently? And what about the mass revelation that took place here, [the revelation] that took place through newspapers? Did such revelation take place abroad? *Arey?* Krishna, the Confluence Age Krishna has two births. Is the Confluence Age Krishna a Brahmin or not? So, do Brahmins have two births? Krishna's birth is said to have taken place in the Copper Age *shooting*. Krishna was born in the end of the Copper Age. So, one birth was that. The other birth is when the *yagyopavit* (sacred thread ceremony) takes place. So, the other birth also took place in 2018. So, he became a firm *dwij* (twice born Brahmin), didn't he? So, did more than half the revelation take place in U.P. or abroad? Where does the intellect of the foreigners remain focused?

Student: In India.

Baba: Where does it remain focused even in India? In U.P.

जिज्ञासु:- जैसे बाबा महाराष्ट्र में ज्यादा आते हैं।

बाबा:- कहीं भी जायें। कहीं भी जायें। लौटकर के कहाँ आवेगा? ☺ अरे! दूर-दूर में भी जावेंगे, बाहर भी जावेंगे तो चक्कर लगाके वापस आवेंगे या नहीं आवेंगे? जैसे समुन्दर होता है। कोई बड़ा समुन्दर है उसमें बीच में जहाज पड़ा हुआ है और उसमें कोई पक्षी रहता है। पक्षी उड़ करके इधर-उधर चला जावेगा, तो कहाँ आवेगा? कहाँ आवेगा? जहाज पर ही आवेगा।

Student: For example, Baba goes more frequently to Maharashtra.

Baba: He may go anywhere. He may go anywhere; where will He return? ☺ *Arey*, even if He goes on tours, even if He goes outside, will He return after travelling or not? Just as, there is an ocean; there is a big ocean, a ship is in the middle of it. And a bird lives on it; the bird will

fly and go here and there, [but] where will it come [back]? Where will it come back? It will come back to the ship itself.

मायूस काहे के लिए हो रहे? उन विदेशियों को कुछ भी नहीं लेने दोगे? बिचारों के पास भाषा ही नहीं है। आँखों से जो देख लेते हैं, सो ही बस उनके पल्ले पड़ता है। भाषा की गहराई न जानने के कारण ज्ञान की गहराई तो पकड़ ही नहीं पाते । और यूपी के लोग? यूपी के लोग तो भाषा जानते हैं, भगवान की भाषा, हिंदी भाषा को अच्छी तरह जानते हैं। वो तो भगवान की वाणी की गहराई में उतर सकते हैं। इसलिए ड्रामा बना हुआ है कल्याणकारी। क्या? विदेशी पहले निकलते हैं और भारतवासी बाद में निकलते हैं। दक्षिण भारत है भारत का विदेश। तो दक्षिण भारत की आत्मार्ये सन् 76 से निकल रही हैं, 86 से निकल रही हैं, अभी तक भी निकलती चली आ रही हैं। अभी भी ज्यादा कहाँ से निकल रहे हैं? दक्षिण भारत से निकल रहे हैं। लेकिन भाषा नहीं जानते हैं इसलिए भगवान के दिल की गहराइयों तक नहीं पहुँच सकते। मनमनाभव भी नहीं हो सकते उतने। और उत्तर भारत वाले? भगवान के दिल की गहराई की बात को समझ सकते हैं क्योंकि भाषा को जानने वाले हैं लेकिन उनका ड्रामा में पार्ट लास्ट में निकलने का है। लास्ट सो फास्ट जाने का पार्ट है। तो भी तसल्ली नहीं होती। भगवान विदेश में ज्यादा क्यों जाते हैं?

Why are you becoming sad (*maayuus*)? Will you not let those foreigners take anything? Poor fellows don't know the language (Hindi) itself; they understand only what they see through their eyes. Because of not knowing the depth of language, they are just unable to grasp the depth of knowledge. And what about the people of U.P? The people of U.P know the language, God's language; they know the Hindi language well. They can go deep into God's versions. This is why the beneficial *drama* is preordained. What? The foreigners come first and the Indians come later on. South India is India's foreign land (*videsh*). So, the souls of South India are coming [in knowledge] from the year 76, from 86 and they are coming even to this date. Even now, from where are more [souls] coming? They are coming from South India. But they do not know the language. So, they are unable to reach the depths of God's heart. They cannot become *Manmanaabhav*⁹ to that extent either. And those from North India can understand the depth of God's heart because they know the language, but their *part* in the *drama* is to come in the *last*. Their *part* is to come *last* and go *fast*. Yet, they do not feel satisfied [and they raise a question:] Why does God go more frequently to the foreign land?

अरे! भगवान के तो तीन रूप हैं। त्रिमूर्ति शिव कहा जाता है। एक ब्रह्मा की मूर्ति, एक विष्णु की मूर्ति, एक शंकर की मूर्ति। ब्रह्मा की मूर्ति तो बेकार हो गयी चलो। पूजा-वूजा होती नहीं, काम की चीज नहीं रही। बाकि विष्णु की मूर्ति, वो देवताओं को आगे बढ़ाती है या असुरों को

⁹ Merge in My mind.

आगे बढ़ाती है? (किसी ने कहा- देवताओं को।) तो वो देवतायें कहाँ से निकलेगीं? यू.पी. से। विदेशी तो सब इस्लामी, बौद्धि, क्रिश्चियन आदि हो गये।

Arey, there are three forms of God; He is called Trimurty Shiva. One is Brahma's personality; second is Vishnu's personality and third is Shankar's personality. Brahma's personality has become useless; alright. It is not worshipped, it is no longer useful; as regards Vishnu's personality, does it promote the deities or the demons? (Someone said: Deities.) So, from where will those deities come? From U.P. All the *videshis* are the people of Islam, the Buddhists, the Christians, etc.

समय-38.06-39.38

जिज्ञासु- बाबा, त्रिमूर्ति के चित्र में विष्णु को खड़ा क्यों दिखाया गया?

बाबा- हाँ। एक होता है सो जाना पुरुषार्थ में, एक होता है उठके बैठ जाना, एक होता है उठके खड़े हो जाना, एक होता है पुरुषार्थ में चलने लग पड़ना, एक होता है पुरुषार्थ में दौड़ने लग पड़ना, एक होता है पुरुषार्थ में उड़ने लग पड़ना और एक होता है हाई जम्प लगाना। तो मीडियम रहता है विष्णु। क्या? पुरुषार्थ में न तो सोता है शंकरजी की तरह। जैसे शंकरजी सोये पड़े हैं। अगर सोता भी है जैसे विष्णु की शेषनाग शैय्या दिखाई है तो आधा जगता हुआ और आधा सोता हुआ। सोता माना आँखों से सोता नहीं है। वहाँ भी जगता ही है। ऐसे विष्णु को जो खड़ा हुआ दिखाया है इसका मतलब पुरुषार्थ में सदैव खड़ा हुआ है। असली पुरुषार्थ कौनसा है? ज्ञान सुनना-सुनाना असली पुरुषार्थ है या पवित्रता को धारण करना असली पुरुषार्थ है? पवित्रता को धारण करना असली पुरुषार्थ है। उस पुरुषार्थ में शंकरजी आगे हैं, ब्रह्माजी आगे हैं या विष्णुजी आगे रहता है? विष्णु हमेशा खड़ा रहता है प्यूरिटी के पुरुषार्थ में, इसलिए खड़ा हुआ दिखाया है।

Time: 38.06- 39.38

Student: Baba, why is Vishnu shown to be standing in the picture of the Trimurty?

Baba: Yes. One is to sleep in *purushaarth* (spiritual effort); one is to sit up. One is to stand up. One is to walk in *purushaarth*; one is to run in *purushaarth*. One is to fly in *purushaarth* and one is to jump high. So, Vishnu remains *medium* (balanced). What? He doesn't sleep in *purushaarth* like Shankarji, just as Shankarji is asleep. Even if he sleeps - for example, Vishnu's *sheshnaag shaiyaa* (a bed of snake named Sheshnaag) is shown - he is half awake and half asleep. 'Asleep' means, he does not sleep through the eyes; he remains awake there as well. Similarly, Vishnu has been shown to be standing; it means, he always remains standing in *purushaarth*. What is the real *purushaarth*? Is listening and narrating the knowledge the real *purushaarth* or is assimilating purity the real *purushaarth*? To assimilate purity is the real *purushaarth*. Is Shankarji ahead in such *purushaarth*, is Brahmaji ahead or is Vishnuji ahead? Vishnu always stands in the *purushaarth* of *purity*. This is why he is shown to be standing.

समय-39.40-40.53

जिज्ञासु- मुरली में बोला है कि आदि में ज्ञान अव्यभिचारी होता है और अंत में व्यभिचारी होता है।

बाबा- क्या?

जिज्ञासु- ज्ञान आदि में अव्यभिचारी होता है।

बाबा- दुनियां की हर चीज पहले सतोप्रधान होती है। सतोप्रधान माना अव्यभिचारी फिर तमोप्रधान माना व्यभिचारी।

जिज्ञासु- बाबा, 108 की जो माला बनेगी राजाओं की वो टोटल यू.पी. की होगी?

बाबा- माना 108 की माला में 12-12 के 9 गुप नहीं हैं? (जिज्ञासु ने कहा- हैं।) वो 9 गुप जो हैं वो विदेशियों की बीजरूप आत्मायें नहीं हैं? 9 गुप्स में विदेशियों की बीज रूप आत्मायें हैं या नहीं हैं? तो विदेशियों के बीजरूप उत्तर भारत में ही होंगे? जब दक्षिण भारत, भारत का विदेश है तो उनका नम्बर कहीं नहीं लगने दोगे? सारा हाऊहप?

Time: 39.40-40.53

Student: It has been said in the murli that the knowledge is *avyabhicaari* (unadulterated) in the beginning. And it is *vyabhicaari* (adulterated) in the end.

Baba: What?

Student: The knowledge is *avyabhicaari* in the beginning.

Baba: Everything in the world is initially *satopradhaan*. *Satopradhaan* means *avyabhicaari*. Then, *tamopradhaan* means *vyabhicaari*.

Student: Baba, will the rosary of 108, of the kings be totally from U.P.?

Baba: Do you mean to say that there are not nine groups of 12 each in the rosary of 108? (Student: There are.) Are those nine groups not the seed forms souls of the *videshis*? Are there seed form souls of *videshis* in the nine groups or not? So, will the seed form [souls] of the *videshis* be present only in North India? When Southern India is India's foreign land (*videsh*), then will you not allow them to get any number? You want to gobble everything?

वाह भाई! आज तो बहुत बढ़िया क्लास हुआ। चाँदनी की जरूरत ही नहीं पड़ी।

Wow brother! Today's class was very good. There was no need for any light.

समय-40.55-43.13

जिज्ञासु- बाबा, गणेश को चूहे की सवारी दिखाते हैं। गणेश कैसे चूहे पर सवारी करता है?

बाबा- गणेश को?

जिज्ञासु- चूहे की सवारी दिखाते हैं।

बाबा- हाँ। ऐसी आत्माओं का आधार लेता है जो अंदर ही अंदर ज़मीन खोखला कर देती हैं। पता ही नहीं चलता घर में रहने वालों को कि हमारा सारा घर खोखला हो गया। जैसे

देहरादून में एक भाई पहुँचा एडवांस का। छः महीने तक अंदर ही अंदर खोखला करता रहा सारे सेंटर को। खोखला कर-करके सारा पोला बना दिया। और छः महीने के बाद जितनी भी आत्मायें निकलीं उन सबको एडवांस ज्ञान दे दिया एक-दो दिन के अंदर इकट्ठा करके वो सारी एडवांस में आ गयी और सारा सेंटर बैठ गया। खुद जाके शादी कर ली। चूहे में दम होती है क्या? चूहे में दम-डकार नहीं होती है। गणेश जी का पार्ट किसका है? अक्वल नं गणेश कौन है? अरे! गणेश, हनुमान का पार्ट दिखाया है सीढ़ी के चित्र में? कौनसे युग से शुरू होता है? कलियुग में। तो गणेश और हनुमान का पार्ट बजाने वाली पहली-2 आत्मायें कौन हैं? (किसी ने कहा- राम और कृष्ण।) राम और कृष्ण। तो कृष्ण वाली आत्मा उसमें प्रवेश करके, चूहे पर प्रवेश करके ये पार्ट बजाती है। सारा कार्य सम्पन्न हो जाता है। ऐसे ही हमको भी गुप्त में घुस जाना चाहिए। अंदर ही अंदर पोला करना है। जब टाइम आये, देखा कि मजबूती आ गयी, तभी बंटादार कर दो।

Time: 40.55-43.13

Student: Baba, Ganesh is shown to be riding a mouse. How does Ganesh ride a mouse?

Baba: Ganesh?

Student: He is shown to be riding a mouse.

Baba: Yes. He takes the support of such souls that make the land hollow from inside. The people living in the home do not come to know at all that their house has become hollow completely. For example, a brother from the *advance* [party] reached Dehradun¹⁰. For six months he continued to make the entire center hollow from inside. He made the entire center hollow from inside. After six months, he gave the advance knowledge to all the souls that came by making them gather within a day or two and all those [souls] came to the *advance* [party] and the entire *center* collapsed. He himself got married. Does a mouse have power? A mouse does not have power. Who plays the *part* of Ganeshji? Who is the No.1 Ganesh? *Arey*, are the parts of Ganesh, Hanuman shown in the picture of the Ladder? From which age does it begin? In the Iron Age. So, who are the first souls that play the parts of Ganesh, Hanuman? (Someone said: Ram and Krishna.) Ram and Krishna. So, the soul of Krishna enters him, the mouse and plays this *part*. The entire task is accomplished. Similarly, we should also enter secretly. We have to make it hollow from inside. When the *time* comes, when we see that there is firmness, then ruin [the centre] (*bantaadhaar*).

समय- 43.23-44.42

जिज्ञासु- बाबा, जब यज्ञ के आदि में बाबा को जगतपिता और माता को जगतमाता के रूप में घोषित कर दिया गया तो कितने वर्षों तक...

बाबा- क्या घोषित कर दिया?

जिज्ञासु- बाबा को जगतपिता और माता को जगतमाता...

बाबा- नहीं घोषित कर दिया गया। कौन से बाबा को और मम्मा को?

¹⁰ A city in Uttaranchal, North India.

जिज्ञासु- कमला देवी दिक्षीत।

बाबा- वो नहीं होता है। शुरूवात में प्रत्यक्ष ही तो नहीं होता है। प्रत्यक्षता यज्ञ के आदि में होती है या ज्ञान यज्ञ की सम्पूर्ण आहूति होती है तब प्रत्यक्षता होती है? आदि में प्रत्यक्षता ही तो नहीं होती है। सुप्रीम सोल बाप प्रवेश करता है। आत्मा जब गर्भ में प्रवेश करती है तब प्रत्यक्षता रूपी जन्म होता है या बाद में प्रत्यक्षता रूपी जन्म होता है? आत्मा गर्भ में प्रवेश करती है तो कुछ पता नहीं चलता कब प्रवेश हुआ, कब नहीं प्रवेश हुआ। तो सन् 36 में जो प्रवेश हुआ वो किसी को पता नहीं है। ये तो सन् 76 के बाद अब पता चल रहा है कि हाँ सन् 36 में सुप्रीम सोल ने प्रवेश किया किसमें किया? कैसे किया? तब थोड़े ही किसी को पता था जो अम्मा-बाप की प्रत्यक्षता हो जाए। ओम शान्ति।

Time: 43.23-44.42

Student: Baba, in the beginning of the yagya, when Baba was declared as the World Father and the mother was declared as the World Mother, how long...

Baba: What was declared?

Student: Baba was declared as the World Father and the mother was declared as the World Mother...

Baba: It was not declared. Which Baba and Mamma [are you are talking about]?

Student: Kamla devi Dixit.

Baba: That doesn't happen. He is not revealed itself in the beginning. Does the revelation take place in the beginning of the *yagya* or does it take place when the final offering is made? The revelation itself doesn't take place in the beginning. The *Supreme Soul* Father enters. Does the revelation like birth take place when the soul enters the womb or does the revelation like birth take place later? When the soul enters the womb, nobody comes to know when it entered, and when it didn't. So, when He entered in the year 36, no one came to know. It is known now after the year 76 that, yes, in the year 36 the *Supreme Soul* entered and in whom He entered. How did He enter? Earlier no one knew [this] so that the mother and the Father are revealed. Om Shanti.